Purva Mimaansa | Refereed | Peer Reviewed
ISSN: 0976-0237 | Volume 12, Issue March 2021 | Impact Factor 4.115

भारतीय संगीत के संदर्भ में फ्यूज़न संगीत का महत्व

बलजिन्द्र सैनी
असोसिएट प्रोफेसर, संगीत (वादन), भा. उ. सिं. राजकीय महाविद्यालय, मटक माजरी, इन्द्री (करनाल)

विश्व एकीकरण के आज के दौर में संसार के सभी देश आपस में व्यवसाय, फैशन, परम्परायें, संस्कृति आदि प्रत्येक क्षेत्र एवं आयामों में आदान–प्रदान करते हैं। आज विभिन्न देश परस्पर कलाओं का भी आदान–प्रदान कर रहें है। इसी के अन्तर्गत संगीत कला का आदान–प्रदान भी विभिन्न देशों के मध्य होने लगा है।

आज विभिन्न देशों की सीमा, भाषा, प्रान्त, जलवायु, रहन–सहन, खान–पान संस्कृति आदि सभी कुछ अलग–अलग होने पर भी पहले की अपेक्षा एकीकरण अधिक देखा जा सकता है। संगीत के संदर्भ में फ्यूज़न संगीत विश्व एकीकरण का ही उदाहरण है।

फ्यूज़न संगीत

फ्यूज़न से अभिप्राय दो वस्तुओं के मेल से है। फ्यूज़न को हिन्दी में मेल या मिलान कह सकते है। Fusion का यदि शाब्दिक अर्थ लें तो 'Fusion' भाब्द 'Fuse' शब्द से बना है। Fuse में ही क्रिया जोड़ कर Fusion शब्द बना। Combine to form a hole अर्थात दो वस्तुओं को जोड़कर एक वस्तु बनाना।

जब किन्ही दो विधाओं के मिश्रण से नवीनता आती है, तो हम उसे Fusion कहते हैं। आज फ्यूज़न का प्रयोग अनेक क्षेत्रों जैसे – फैशन डिजाइनिंग, आर्किटैक्चर, एग्रीकल्चर, पाक–कला आदि में हो रहा है। संगीत के क्षेत्र में भी विद्वानों ने विभिन्न शैलियों का प्रयोग करके नवीन प्रयोग किये हैं। जैसे – दक्षिणी व उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत, लोक व शास्त्रीय संगीत, पश्चिम व भारतीय संगीत आदि।

परन्तु आज Fusion संगीत के नाम पर आये दिन ऐसे प्रयोग हो रहे हैं, कि Fusion निरर्थक सा प्रतीत होने लगा है। अधिकतर लोगों में भ्रम है, कि भारतीय एवं पाश्चात्य वाद्यों को मिलाकर बजा देने से फ्यूज़न हो जाएगा। परन्तु यह इतना सरल नहीं है। सही अर्थों में फ्यूज़न का प्रयोग करने के लिए जिन दो संगीत क्षेत्रों, वाद्यों या शैलियों का प्रयोग किया जा रहा है, इन दोनो का प्रयोग करने वाले व्यक्ति को दोनों क्षेत्रों का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। साथ ही साथ दोनों में से एक शैली या क्षेत्र में उसे पूर्ण जानकारी होनी चाहिए। और यह प्रयोग इस प्रकार के विवेक और कुशलता से होना चाहिए कि दोनों शैलियां समान रूप से सुनी, देखी व अनुभव की जा सके। अतः यह कहा जा सकता है, कि फ्यूज़न संगीत का प्रयोग केवल अपने क्षेत्र में प्रवीण, कुशल एवं चातुर्य से परिपूर्ण विद्वान ही कर सकते हैं। फ्यूज़न के माध्यम से किसी भी संगीत विधा में रोचकता लाई जा सकती है। फ्यूज़न से शास्त्रीय संगीत को भी आम जनता में लोकप्रिय बनाया जा सकता है।

PURVA MIMAANSA

परन्तु फ्यूज़न का अर्थ यह नहीं है कि इससे शास्त्रीय संगीत के मूल रूप को कोई हानि हो। यह क्रिया बहुत सावधानी से होनी चाहिए, क्योंकि संगीत एक सूक्ष्म और गतिशील कला है।

संगीत कला के संदर्भ में फ्यूज़न वह क्रिया है, जिसमें दो या दो से अधिक संगीत आविष्कारों को कलात्मक ढंग से पूरा मिलाया जाए तो उससे एक नये संगीत का आविष्कार हो। फ्यूज़न संगीत को क्रोस ओवर म्यूजिक Contemporary Music तथा वर्ल्ड फ्यूज़न म्यूजिक भी कहा गया है।

आज के वर्ल्ड फ्यूज़न म्यूजिक की विशेषता है कि यह एक–दूसरे से सम्बन्ध स्थापित करने में पूर्णतः निपुण है। पूरे संसार के लगभग 21 देशों के कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करके विभिन्न प्रकार की संगीत कलाओं और कलाकारों को उन्नति करने का अवसर प्रदान कर रहें हैं। वर्ल्ड फ्यूज़न संगीत ने लोगों को अधिक प्रसिद्ध व लोकप्रिय बना दिया है। इसके द्वारा अपनी कला दिखाने का अवसर प्राप्त होता हैं तथा साथ ही परम्परागत संगीत का भी अधिक विकास होता है। नये–नये संगीत की रचना के लिए संगीत के क्षेत्र में फ्यूज़न संगीत का बहुत महत्व है। फ्यूज़न संगीत के आदान–प्रदान के साथ–साथ नये–2 साधनों का भी आविष्कार किया जा रहा है।

भारतीय संगीत में फ्यूज़न संगीत की परम्परा एवं महत्व

भारत के संदर्भ में फ्यूज़न की परम्परा ज्यादा प्राचीन नहीं है। सन् 1955 में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में 'उस्ताद अली अकबर खाँ ' के प्रस्तुतिकरण के पश्चात भारत में फ्यूज़न की परम्परा का प्रारम्भ माना जाता है। भारतीय फ्यूज़न संगीत का आरम्भ 1960–70 के बीच में 'रॉक–न–रोल' संगीत का फ्यूज़न भारतीय संगीत से करने पर हुआ, परन्तु यह केवल यूरोप और अमेरिका तक सीमित था। संगीत एक परिवर्तनशील कला है। प्रत्येक संगीतकार अपने संगीत में कुछ विविधता या नयापन लाने का प्रयास करता है। तथा उसके इस प्रयास को लोकप्रिय बनाने में समय लगता है, एवं कई बार संगीत का परिवर्तन बहुत जल्दी लोक प्रिय हो जाता है।

भारत में ब्रिटिश राज्य के समय में संगीतकार राज दरबारों से रास्ते पर आ गये थे। उनका आर्थिक एवं सामाजिक दर्जा खत्म हो गया था। भारतीय अभिजात संगीत कमजोर हो गया तथा तभी स्वतन्त्रता के लिए प्रयास पूरे भारत में जोर पकड़ रहे थे। इसके लिए नाटकों का प्रयोग लोकप्रिय हो गया था तथा लगभग सभी भारतीय संगीत कार इस क्रान्ति का हिस्सा बन गये थे। इन संगीतकारों ने अपने संगीत को प्रयोग इन नाटकों में शुरू किया ताकि लोगों को स्वतन्त्रता के प्रति ज्यादा जागरूक किया जा सके। इस प्रकार भारतीय संगीत में अनेक परिवर्तन आये। इन परिवर्तनों को मान्यता मिलने में बहुत समय लगा। आज के समय में नाट्य संगीत के अन्तर्गत महाराष्ट्र का नाट्य संगीत सबसे लोकप्रिय संगीत है।

ख्याल शैली भारतीय अभिजात संगीत की लोकप्रिय गायन शैली है जो कि 13वीं शताब्दी में प्रचार में आई। इसे लोकप्रिय होने में पूरी सदी लग गई। इसके प्रचार में आने के लगभग छः

सदी के बाद सदारंग व अदारंग ने ख्याल गायकी को भारत में पहचान दिलवाई तथा लोक प्रिय बनाया। इस्लामी आक्रमणों के कारण भारत में भारतीय एवं पारसी संगीतज्ञों के आदान–प्रदान से नये वाद्य एवं ख्याल का आविष्कार हुआ। समाज में इसे मान्यता प्राप्त अभिजात संगीत कहलाने में बहुत लम्बा समय लगा। यह प्राचीन काल का फ्यूज़न था। समय के साथ भारतीय संगीत में अनेक परिवर्तन हुए जैसे – प्राचीन काल में जाति गायन प्रचलित हुआ, मध्य काल में राग–रागिनी वर्गीकरण तथा आधुनिक काल में थाट राग वर्गीकरण तथा राग वर्गीकरण प्रचार में आया, आज के समय में संगीत की दो अलग–अलग विधाओं को मिलाकर फ्यूज़न संगीत का विकास किया गया। बीसवीं सदी में फ्यूज़न संगीत तैयार करने का श्रेय पं0 उदय शंकर व उनके भाई रवि शंकर को जाता है। अच्छे कलाकारों में सृजनशीलता होती है तथा ये कलाकार अपनी कुशलता से नये–नये प्रयोगों का आविश्कार करके अपनी अलग पहचान बना लेते हैं। अलग–अलग विचारकों एवं संगीतज्ञो ने फ्यूज़न संगीत के बारे अपने विचार प्रकट किये हैं।

श्रीमती मंजरी विकास गोखले के अनुसार ''संगीत की प्रगति के लिए फ्यूज़न आवश्यक है। फ्यूज़न की संस्कृति तभी जीवित बनेगी जब उसमें अनुभूति को एकाकार करने की उमंग होगी। सच्चे और अच्छे की ही काल के प्रवाह में जीत होती है।

श्रीनू मजूमदार के शब्दों में ''भारतीय तथा विदेषी लोगों के लिए संगीत का अपना दृष्टिकोण है। तब इन दो अलग–अलग विधाओं को मिलाकर एक नया संगीत तैयार किया जाए तो निश्चित रूप से संगीत में दुविधा होगी और जो असमंजस और दुविधा पैदा करे वह कभी भी संगीत नहीं हो सकता। जहां तक फ्यूज़न का सवाल है तो वह संगीत के लिए हमेशा दुविधा जनक ही होगा। संगीत हमेशा अनुशासन एवं नियमों में बंधा होता है। इसलिए वह दुविधा जनक हो ही नहीं सकता।''

डा0 विश्व मोहन मह के अनुसार – ''भारतीय शास्त्रीय संगीत ऐसे महासागर की तरह है जिसके रहस्य को मालूम कर पाना कठिन है। फ्यूज़न की कोई परिभाषा नहीं है परन्तु इतना कह सकते हैं कि यह भी क्रियात्मक संगीत का एक अंग है। इसमें प्रयोग की कई संभावनाएं है। यह आजाद है। यह किसी भी प्रकार की सीमाओं में बंधा नहीं है।''

रविन्द्र मिश्र के अनुसार – '' यह मान लेना कि भारतीय और पाश्चात्य संगीत एक दूसरे से बिल्कुल अलग हैं, ऐसा भारतीय संगीत हो ही नहीं सकता जिसमें पाश्चात्य संगीत का थोड़ा बहुत अंश न मिला हो और न ही ऐसा पाश्चात्य संगीत है, जिसमें भारतीय संगीत का अंश न मिला हो। इसी प्रक्रिया के तहत हारमोनियम जैसे विदेशी वाद्य, भारतीय संगीत का हिस्सा बन गये हैं। पूरे हिन्दी फिल्मों के पार्श्व संगीत की बुनियाद ही फ्यूज़न पर आधारित है।''

संगीत एक ऐसी कला है जिसमें परम्परा को अधिक महत्व प्राप्त है। संगीत ने हमारी पांच हजार वर्ष पुरानी संस्कृति और सभ्यता को जोड़ कर रखा है। संगीत कार एक संवेदनशील प्राणी होने के साथ–साथ बुद्धिमान व्यक्ति भी होता है, जो अपने चारों और के वातावरण से प्रभावित

होता है। और अपनी कला में उन मनो भावों को व्यक्त करता है। कलाओं में नवीन प्रयोगों का सदा से ही समावेश रहा है तथा हमारे भाास्त्रों ने भी इसे मान्यता प्रदान की है। संगीत के क्षेत्र में इन विविध प्रयोगों में सबसे ज्यादा ऐसे प्रयोगों को स्थान मिला है जिनमें दो परम्पराओं का मिश्रण हुआ है। संगीतज्ञ अपने देश की सीमाओं को तोड़ते हुए अपना ज्ञान व संस्कृति दूसरे देशों में बांटते हैं।

किसी भी कला की परम्परा तब तक समृद्ध नहीं हो जब तक कि उसमें कोई प्रयोग न किया जाए। नवीन प्रयोग करने से पहले यह जानना अति आवश्यक है कि हमारा इस प्रयोग के पीछे क्या उद्देश्य है। आध्यात्मिकता हमारे संगीत की आत्मा है तथा हमारा संगीत विश्व एवं समाज कल्याण के लिए है। यदि हम अपनी इन परम्परागत मान्यताओं को ध्यान में रख कर नया प्रयोग या मिश्रण करते हैं, तो वह प्रयोग उसी विचार धारा में आकर प्रवृत हो जाएगा। संगीत की तुलना सागर से की गई है। जिस प्रकार सागर में लगातार लहरें उठती रहती हैं, उसी प्रकार संगीत में निरन्तर प्रयोगों द्वारा ही परम्पराएं बनती है।

आज भले ही फ्यूज़न संगीत का प्रचार बढ़ रहा हो परन्तु यदि हमारा उद्देश्य लोगों को शास्त्रीय संगीत से अवगत करवाना हो तो इससे शास्त्रीय संगीत को कोई हानि नहीं होगी। यदि केवल परम्परा तक ही सीमित रहे तो संगीत कला विकसित नहीं हो सकती और यदि नवीन प्रयोग करते रहे तो संगीत कला में परिपक्वता नहीं आ सकती। इसलिए दोनों का सामंजस्य संगीत में अति आवश्यक है।

आज फ्यूज़न संगीत की (गायन एवं वादन की) लोकप्रियता से अंदाजा लगाया जा सकता है, कि संस्कृतिक आदान–प्रदान व विश्व एकीकरण से संगीत से पूरे विश्व की रचनात्मकता एवं रूचि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। अपनी ही संस्कृति, संगीत और राश्ट्र की सीमाएं उन संगीतज्ञों की बाधक नहीं है, जो कुछ नया करने और नये क्षतिज को ढूंढने के लिए प्रयासरत है। आज इसी कारण शास्त्रीय संगीत और पाश्चात्य संगीत के मिश्रण (फ्यूजन) की उपयोगिता को बढ़ावा मिल रहा है।

संदर्भ सूचि

अमल कुमार दास भार्मा, विश्व संगीत का इतिहास।
संगीत कला विहार, अगस्त 2005।
पं0 विजय शंकर मिश्र, अंतनार्द, सुर और साज।
संगीत, अक्तूबर 2006।
डा0 कविता चक्रवर्ती, भारतीय संगीत में वाद्यवृन्द।
शोभा माथुर, भारतीय संगीत में मेल तथा थाट का ऐतिहासिक अध्ययन।
सुनन्दा पाठक, हिन्दुस्तानी संगीत में राग की उत्पति एवं विकास।

PURVA MIMAANSA